R.N.I.-
UPHIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

प्रभजोत कौर अंक

वर्ष 25 | अंक 1 | रविवार, इलाहाबाद, 25 मई 2025 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार प्रभजोत कौर

उमेश श्रीवास्तव

आस्था और विश्वास,
ईश पर।
लुधियाना में जन्मी हैं ,
प्रभजोत नाम है उनका ,
संघर्षों में पली बढ़ी ।

तो बात हो रही है लुधियाना में जन्मी प्रभजोत कौर की। मां की गोद में पली बढ़ी प्रभजोत कौर को अपनी मां से असीम लगाव था, वह मां के बिना एक पल भी नहीं रह सकती थीं। लेकिन विवाह के बाद उन्हें माँ से अलग रहना पड़ा । शुरुआत में अखरा परंतु बाद में माँ के बिना रहना सीख लिया । जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव के बाद अंत में कलम ने उन्हें सहारा दिया। प्रभजोत कौर ने लिखना-पढ़ना शुरू किया और एक सफल रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित होती गई। कवयित्री प्रभजोत कौर की कविताओं की बानगी देखिए

पहली बानगी

मत सोचना तेरी तारीफ़ करते हैं
तूझे बहलाने को
हम तो दिलवाले हैं
दिल की कहते हैं
पूछ ले चाहे तु ऊपर वाले से।

दूसरी बानगी

तुम सामने हो तो
चलती हैं सांसें मेरी ।
दिल से पुकारो तो
धड़कती हैं धड़कनें मेरी।

तीसरी बानगी

ये क्या कर दिया तेरे इश्क ने
दिल को क्यों रुला दिया तेरे इश्क ने
ये सिसकियों भरा सैलाब
बना दिया है तेरे इश्क ने

इस तरह अपनी रचनाधर्मिता के सहारे उन्होंने जीवन के कई सफल आयाम देखें। उनकी इसी विलक्षण क्षमता के लिए उन्हें **मई माह का सावित्री देवी स्मृति सम्मान** देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया अवश्य दीजिए ।

अंत में -

लिखते-लिखते बात बनेगी ,
लिख डालो जीवन की गाथा ।
प्रभु चरणों में धुनि रमा कर ,
कह डालो सब वाथा काथा।

उमेश श्रीवास्तव

सहनशीलता जोत का बख्तर

प्रभजोत कौर

मैं जब कभी भी, कहीं से भी, किसी के मुंह से भी यह सुनती हूं कि भगवान हमेशा हमारे साथ होते हैं। उनकी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता और जिनके ऊपर भगवान खुद मेहरबान हो जाए उनमें सब्र,प्रेम और सहनशीलता की भावना खुद ब खुद ही आ जाती है।

बचपन में तो पता ही नहीं था कि ऐसा सब क्या होता है ।पर अब जब कभी अपने बचपन की कोई बात याद आती है तो महसूस होता है कि हां, हर कदम भगवान ने मेरे मेरा हाथ पकड़ कर मुझे चलना सिखाया है।

मेरा जन्म 23 दिसंबर 1978 को लुधियाना में हुआ पांच भाई बहनों में सबसे छोटी हूं। यहां तक मुझे याद है मैंने कोई भी शरारत या गलती ऐसी नहीं की है, कि मुझे घर से डांट पड़ी हो। स्कूल में भी कभी ऐसा अवसर नहीं मिला। मुझे कभी किसी ने जिंदगी के बारे में कुछ सबक नहीं सिखाये पर आज तक समझ नहीं आया कि जब मां- बाप, भाई- बहन, किसी अध्यापक ने मुझे जिंदगी के पाठ नहीं पढ़ाया तो फिर मुझे इतनी समझ और सब्र कैसे मिला।

जैसे मुझे याद आता है कि जब मैं चौथी कक्षा में थी तो हमारे स्कूल में बड़े पर्दे पर एक फिल्म दिखाई जानी थी ।अध्यापिका ने कहा कि कल सभी ने 50 50 पैसे लेकर आने हैं ।जब मैं स्कूल से घर गई तो पता चला कि मेरे पापा का एक्सीडेंट हो गया है ।और वह अस्पताल में हैं इसलिए मैं पैसे लेकर नहीं आई। अगले दिन हमारा पूरा स्कूल एक हाल में फिल्म देख रहा था और सिर्फ मैं अकेली स्कूल के आंगन में बस्तों के बीच में बैठी हुई थी। मुझे आज भी याद है मुझे जरा सा भी दुख नहीं लगा कि मैं अंदर फिल्म क्यों नहीं देख रही हूं। मैंने उस दिन अपनी पंजाबी की और हिंदी की किताबें एक घंटे में पढ़ दी ।जब बच्चे बाहर आए तो मुझे चिढ़ाने लगे लेकिन मैंने कुछ भी नहीं बोला ।वैसे मैं चंचल थी ,शरारती भी थी, पढ़ने में होशियार भी थी।

12वीं कक्षा तक पहले दर्जे से पास होते हुई हूं ।तब हमें नहीं पता था कि ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर को सर्जन कहते हैं। पर मैं एक ऐसा डॉक्टर बनना चाहती थी जो शरीर की चीर फाड़ करे,) क्योंकि मैं अंदर के सारे अंगों को देखना चाहती थी। लेकिन स्कूल में मेडिकल ना होने के कारण मुझे 11वीं आर्ट में ही करनी पड़ी। पर सच में मुझे कोई शिकवा नहीं था। फिर मेरे मन ने एक प्रोफेसर बनना चाहा। एक ऐसी प्रोफेसर बनना था जो दमे के मरीज विद्यार्थियों को खुद बोल-बोल के सारा पाठ याद कर सके। क्योंकि मेरी एक सहेली को दमे की बीमारी थी ।और उसका

दसवीं की क्लास दो बार करनी पड़ी थी।दसवीं ,11वीं ,12वीं में मैं खुद उसे बच्चों की तरह बोल-बोल के याद करवाती थी। क्योंकि जब वह बोलकर याद करती थी तो उसे सांस की समस्या ज्यादा हो जाती थी। वह सब बातें, वह सेवा करने का भाव, मेरे अंदर कहां से आया मुझे आज तक नहीं पता।

बी ए कर ही रही थी कि मेरे छोटे भाई की मेरे सामने ही मौत हो गई। मैंने उसे बनावटी सांस देने की भी कोशिश की पर उसे बचाया नहीं जा सका। जब मेरे पापा मेरे भाई को अस्पताल ले गए थे तब मेरे मन में एक ही बात थी कि मुझे रहरास साहिब का पाठ करना है ।क्योंकि मैं रोजाना ही रहरास साहिब और जपुजी साहिब का पाठ किया करती थी। उसके साल बाद ही तीन-चार दिनों के अंदर ही मेरी शादी मोहाली में हो जाती है ।शादी का माहौल भी मेरे लिए एक सपने जैसा था क्योंकि मैं कोई ख्वाब नहीं सजाए थे कहते हैं की जोड़ियां ऊपर से बनकर आती हैं। शायद इसीलिए हमारी जोड़ी बनने का वही समय निश्चित था ।क्योंकि तब मेरे पापा भी मेरी शादी के लिए पहले तैयार नहीं थे वह भी चाहते थे कि मैं खूब पढ़ लिख जाऊं पर संजोग इनके साथ ही जुड़े थे तो तीन दिन के अंदर हमारी शादी हो गई।

शादी से एक दिन पहले तक मैं अपनी मम्मी की पूरी तरह से दीवानी थी मुझे सिर्फ और सिर्फ मम्मी चाहिए होती थी। अगर मम्मी किसी दिन मुझे स्कूल से वापस आने पर ना मिले तो मेरे लिए बहुत मुश्किल होता था या कभी मम्मी मुझे घर छोड़कर कहीं चले जाती थी तो मैं खूब रोती थी और उनके पीछे उनके साथ जाने की जिद करती थी।

इसलिए कई बार बड़ा भाई या बहन मुझे कमरे में बंद भी कर देते थे। जब तक मेरी मम्मी बस नहीं बैठ जाती थी। शादी क्या होती है इसके बारे में मुझे कुछ भी नहीं पता था शादी से पहले एक दिन पहले तक मुझे ऐसा था कि पतिदेव बाहर चले जाएंगे तो मैं अपने मायके की तरह ही घर पर घर का काम करके पढ़ाई कर सकती हूं ।पर मेरी शादी के बाद ऐसा नहीं हुआ मुझे आगे पढ़ने नहीं दिया गया पर मैंने कभी भी कोई भी शिकवा नहीं किया सच में मेरे दिमाग में कभी यह शिकायत आई ही नहीं ।भगवान ने मेरे आंगन में बहुत सुंदर से दो फूल दिए फूल दिए पहला बेटा 2001 में और दूसरा बेटा दिसंबर 2003 में बड़े ऑपरेशन के साथ हुआ फिर 2005 में अचानक ही बिना किसी दर्द ,बिना किसी तकलीफ में एक स्कैन में पता चलता है कि मेरे पित्ती में पथरियां हैं। तो मेरे पति ने पित्ता का ऑपरेशन करवा दिया। जब पित्ता बाहर निकल गया उसके टेस्ट हो गए तो पता चला कि उसमें एक भी पथरी नहीं थी। मगर किसी प्रकार का जाल सा बना हुआ था। फिर उसे टेस्ट के लिए भेजा गया पर उसमे कैंसर की शिकायत नहीं आई ।सब कुछ बहुत अच्छे से चल रहा था कि 2009 में सितंबर को पैर के मीठे-मीठे से होते दर्द ने एक भयानक रूप ले
लिया। जब एक डॉक्टर ने हमें सच बताएं बिना हमसे 20000 रुपए लूट लिए और हमें एंटीबायोटिक देता रहा ।जबकि उसे पता चल चुका था कि मेरे पैर में कैंसर है।

लेकिन भगवान ने हमें जल्दी ही पीजीआई का रास्ता दिखा दिया और पीजीआई में लगभग 2 महीने में ही मेरे सारे टेस्ट हो गए जिन से पता चला कि मुझे ओस्टियोसारकामा नामक कैंसर है ।यह कैंसर अक्सर शरीर की बड़ी हड्डी में ही होता है पर मेरे पैर की एड़ी में था इसलिए यह पीजीआई का सबसे पहला केस बन गया ।एक अद्भुत बात यह हुई कि बेशक बायोप्सी में कैंसर डायग्नोज हो गया पर मुझ में कोई भी कैंसर के लक्षण नहीं थे। ना ही मुझे कभी बुखार हुआ था और ना ही कभी मेरा भार कम हुआ था ।मैं एक नॉर्मल जिंदगी की रही थी ।घर का सारा काम कर रही थी ।बच्चों को बहुत अच्छे तरीके से पाल रही थी ।इसके लिए पीजीआई में मेरी बायोप्सी रिपोर्ट बनाने के लिए डॉक्टर के तीन पैनल बैठे ।उस के बाद मुझे वहां बुलाया गया उसके बाद ही मेरी रिपोर्ट बनी और और जनवरी में मुझे कीमो शुरू हो गई मुझे 2 महीने में लगातार नौ कीमो ल गाई गई वह दौर बहुत मुश्किल वाला था ।क्योंकि मेरा एक बेटा 6 साल का और एक बेटा 9 साल का था। उस समय मेरे पति मेरे मम्मी पापा और खास करके बच्चों ने मेरा बहुत साथ दिया। 4 मई 2010 को सुबह 10:00 मुझे हड्डी विशेषज्ञ का फोन आता है कि हमें पी जी आई अभी पहुंचना है ।
जब मैं डॉक्टर के ऑफिस में जाती हूं तो वह मुझे सीधे-सीधे ही बोल देते हैं कि आपके घुटने के नीचे का पैर काटना है ।तब तक मेरे पति गाड़ी

...शेष पृष्ठ 2 पर

प्रभजोत कौर
अंक

कविताएं

1
मत सोचना तेरी तारीफ़ करते हैं
तूझे बहलाने को
हम तो दिलवाले हैं
दिल की कहते हैं
पूछ ले चाहे तु ऊपर वाले से।

2
आप जौहरी हो तभी तो हमें थाम लिया
वर्ना लोग तो हमें पत्थर समझ के ठुकराते थे

3
मेरा हँसना, मेरा रोना
और मेरी जिंदगी
अब तो बस तेरे ही इशारों पर है
मैं तो कठपुतली हूं तेरे प्यार की
मजा ले चाहे जितना
नाच लूँ गी मैं
पर कभी मेरे दिल से ना खेलना
जीते जी मर जाऊंगी मैं।

मेरी हसरत हो तुम

कभी की थी तमन्ना दिल ने
कि दोस्ती ऐसी हो जो
मेरे लिए दुनिया से ना लड़े
बल्कि मुझे मजबूत करें
दुनिया से लड़ने के लिए।

दोस्ती ऐसी हो जो मुझे
आंधियों से ना बचाए
बल्कि मुझे आंधियों में
जलते रहना सिखाएं।

दोस्ती ऐसी हो जो मुझे
महफिल में ना ले जाए
बल्कि तन्हाई मेरी
महफिल बन जाए

हाँ, मेरे दोस्त तुम
बिल्कुल वैसी ही हो
मेरे ख्यालों, मेरे भावों
और मेरे एहसास की रूह।

5
हम क्या जाने मौसम का बदलना
हम क्या जाने बसंत और पतझङ
अजी हम तो अपने सुभाव से मौसम बदलते हैं

6
सारा समंदर मेरे पास है
एक बूंद पानी मेरी प्यास है
दुनिया भर की बहारें मेरे पास हैं
सकून दे जो दिल को
वो एक पल तेरे ही पास है।

7
खुशी, या खामोशी
औरों की जरूरत होगी।
ए जानेमन,
हम तो तुझ में तुम्हीं को ढूँढते हैं।

8
दिल ने किया महसूस कि
तुम ने पुकारा है
पर दिमाग ने कहा कि
ये वहम हमारा है।

9
आज आसमान में चांद और तारे की स्थिति देख कर
मन यूँ व्याकुल हो गया कि कलम ने कर ही दिए बयाँ
एहसास .....

10
तेरे दिल के एहसास को
एहसास बनाकर अपने
जब पन्ने पर पिरोती हूं
तब कहीं जाकर बनती है....
कविता ...

11
ये रूह भी तो तेरी चाहत के दम पर ही है जानाँ
तेरी चाहत के बिन ये भी आजाद हो जाएगी एक दिन ।

12
मुझे मत रोक तेरे करीब आने से
मैं तन्हाई हूँ तेरी हमदम बन जाऊँगी साथ छोङ देंगे
सभी तेरा मैं तो कब्र में भी तुझे तन्हा न सलाऊँगी।

13
मत इतरा इतना, अपनी खामोशी पर
ए दोस्त ....
हम न होंगे तो ये खामोशी तेरे किसी काम की त

14
महफूज कर लो
मेरे लफ्जों को
बहुत तन्हा हो जाएगी
तेरी खामोशी .....
मेरे जाने के बाद ।

15
तू मेरी जिंदगी जैसे ही तो है
पता ही नहीं लगता कि
अगला पल क्या रंग दिखाने वाले है
रो लूं या मुस्कुरा लूं ये मेरी मर्जी है

16
चाहे तुम नफरत करो मुझ से ,
पर ये दावा है मेरा कि
मुझ सा कोई तेरी जिन्दगी में न आया होगा
न ही अब कोई आएगा ,
जो तेरी खामोशी में भी
अपने लिए दुआ ढूँढ ले।

17
जितने भी चाहे तुम
इम्तिहान ले ले
ए जिन्दगी !!!
हमने भी हर इम्तिहान
पास करने की कसम खाई है

18
कहते हो हम से कि खुदा न कहूँ
तुम्हें इन्सानों सी एक भी अदा तो दिखा

19
तु सदा खुश रह ये दुआ है हमारी,
पर ये तेरी खामोशी का हक सिर्फ मेरा है,
मेरा ही रहने देना

20
माफ कर देना अगर हमसे कोई
खता हो जाए इन्सान हूँ ',
खता करना फितरत है मेरी

21
कबूल है मुझे खामोशी तेरी
दिलो- जान से
पर मेरी खता तो बता
कोई बोझ लेके नहीं मरना मुझे

22
कोई भगवान् को नारियल से मना लेता है
तो कोई व्रत रखने से... '
मेरे खामोश फरिश्ते '
तु ही बता कि तुझे क्या अर्पण करें हम

23
तेरी खामोशी में भी मुझे
मंदिर की घंटी की मधुर ध्वनि महसूस होती है

24
सुना है बहुत जप तप करने पङते हैं ,
खुदा को पाने के लिए ।
हमारी खुशनसीब तो देखिए ,
चार कदम चले, कि खुदाया यार पा लिया ।

25
अब रूठते हो,
न हमें मनाते हो तुम ।
न अब अपनापन है,
न ही बेवफा लगते हो तुम ।
पहले वाली बात नहीं रही अब तुम में,
बदले बदले से लगते हो तुम।

26
सुना है रब इनायत करता है
अपने बंदों पे
तु भी कर्म करना मुझ पे
कि इक बार गले लगा के
खामोश सी कोई दुआ देना मुझे ।
तेरे सजदे में सर झुकाया है हरदम
कुछ तो अच्छा सिला देना मुझे ।

27
बरसात आई
पहले इस ने गर्मी भगाई।
फिर दिलों में मुहब्बत जगाई।
न जाने अब और क्या है इस।।

28
बहुत तकलीफ देती हैं
ये खरोंचे
ए!! जिंदगी
जो दी हैं तुने सौगात .....
मुझे तराशने में।

29
ए कब्र तेरी गोद में छुपा ले मुझे।
बहुत शोर है दुनिया में
सकून ए दिल की आरजू है
सोना चाहती हूँ तेरी आगोश में
डरती हूं दुनिया के अंधेरों से
अब ले लो अपनी पनाह में।

30
आज अपने रूठे हैं हमसे,
चलो कोई बात नही।
मना लेंगे सभी को जल्दी ही,
बहुत भरोसा है खुद पर हमें

दीए के बुझने में हर बार
कसूर आँधियों का नहीं होता।
कई बार तेल की कमी से भी
दीए बुझ जाया करते हैं

31
हम तेरी आँखों के सिवा
तेरे दिल में भी हैं।
बशर्ते तु अपने सर को
कभी झुका तो सही।
दुनिया क्यों ढूँढेगी मुझे,सभी को खबर है
कि तेरी ही मोहब्बत में खोए हैं हम ।

32
ये रूह भी तो तेरी
चाहत के दम पर ही है जाना
तेरी चाहत के बिन,
ये भी आजाद
हो जाएगी इक दिन ।

33
जब देखो रोते ही रहते हो
लोगों के गले मिलने के बहाने ,ढूंढते रहते हो।
रोने की वजह ही, खत्म क्यों नहीं करते?
हर पल बेचारा ,बने रहने की ख्वाहिश
ही खत्म क्यों नहीं करते

34
ये रूह भी तो तेरी चाहत के दम पर ही है जानाँ
तेरी चाहत के बिन ये भी आजाद हो जाएगी एक दिन ।

35
मुझे मत रोक तेरे करीब आने से
मैं तन्हाई हूँ..
तेरी हमदम बन जाऊँगी
साथ छोङ देंगे सभी तेरा
मैं तो कब्र में भी तुझे तन्हा न सलाऊँगी।

36
चलो एक समझौता करते हैं
तुम हमें दर्द दे कर खुश रहना
हम दरद को दवा बना लेते हैं।

37
वो और उनकी यादों के साये
कभी बरसें कभी बूंद को भी तरसाऐं।

38
कोई नहीं अफसाना मेरा
मैं खुद की ही दीवानी
मस्त हूं खुद के ही संग
दुनिया से हूं बेगानी

39
शमा का जलना भी जरूरी है
परवाने का मिट जाना भी जरूरी है
किया है इश्क तो मिलन के साथ
जुदाई भी जरूरी है।

40
तुम सामने हो तो
चलती हैं सांसें मेरी ।
दिल से पुकारो तो
धङकती हैं धङकनें मेरी।
यूं करो न बंद पट
निगाहों के
इन ही में है
जन्नत मेरी ।
जो है दिल में
कह दो न!!!!
तेरी आंखों को
पङ लेती हैं आंखें मेरी।

41
बदले बदले से तुम
सुनो,
कुछ दिनों से बदले बदले लगते हो
खुश हो साथ मेरे मायूस भी लगते हो

करते हो बहुत इश्क की बातें
कुछ दिनों से बेवफ़ा से लगते हो

बातें तेरी सुकून नहीं देती आजकल
न जाने क्यों अजनबी से लगते हो

ठुकराया है सभी को तेरे इश्क में
फिर भी बेगाने से लगते हो

मैं तो साथ हूँ हर पल तेरे
भरी महफिल में तन्हा क्यों लगते हो ।

एहसास

हो गया है एहसास मुझे क्यों डरती हूँ हर पल
तुझ पर तो भरोसा है रब से भी ज्यादा
खुद पर यकीन नहीं है आजकल

तेरे इश्क ने रूबरू कराया खुद से
बस खुद में ही खोई रहती हूँ हर पल

तू इश्क ,तू खुदा तू ही हर एहसास

पृष्ठ एक का शेष...

सहनशीलता जोन का...

पार्क कर रहे होते हैं और डॉक्टर बोल देते हैं कि आपकी सर्जरी कल सुबह ही 7:00 बजे होनी है और आपको अभी दाखिल होना है ।वह मुझे कुछ कागज ,कुछ फॉर्म भरने के लिए देता है और मुझे दाखिल होने के लिए बोल देता है। जब मैं उनके कमरे से बाहर आती हूं तो पति को बताती हूं पर फिर भी मेरे चेहरे पर कोई डर बिल्कुल भी नहीं था। मैं बड़े आराम से अपने पति को बता देती हूं । उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं फिर उनको देखकर मेरी आंखें हल्की सी नम हो जाती हैं। मैं उनको बोल देती हूं कि वह घर जाएं, क्योंकि हम तो बिल्कुल अनजान थे कि हमें इतनी जल्दी यह सब सहना पड़ेगा ।इसलिए
हमारे पास पैसे भी नहीं थे। मैंने पति से कहा कि आप घर जाओ और बच्चों को स्कूल से
लेकर घर छोड़ना। मैं यहां का खुद संभाल लूंगी।

जब मैं वहां अस्पताल के इमरजेंसी के कमरे में दाखिल हो जाती हूं मेरे पति के वापस आने तक डॉक्टर अपनी कार्रवाई शुरू कर देते हैं। मेरे टेस्ट करने के लिए खून के सैंपल लिए जाते हैं ।मेरी हिस्ट्री लिख ली जाती है। जब तक मेरे पति वापस मेरे पास आते हैं ,सब हो जाता है। मेरे पति बहुत घबरा जाते हैं मेरे लिए वह सब एक बहुत आम सी बात थी, मानो कोई फिल्म ही थी कि ऐसे ऐसे होना ही है। मेरे आस-पास के लोग मुझे देखकर बहुत हैरान थे क्योंकि मैं बहुत खुश थी ।अगले दिन सुबह मुझे ऑपरेशन थिएटर में ले जाया जाता है ।लेकिन किसी और की इमरजेंसी सर्जरी के लिए मेरी सर्जरी को पोस्टपोन कर दिया जाता है। जब वेटिंग रूम में मैं और मेरी ननद थे हम इतने ज्यादा हंस रहे थे मानो आज मैंने कोई जंग जीत ली हो और दुनिया की सबसे खुश औरतों में ही हूं ।दोपहर को 1:00 बजे मेरी सर्जरी हो जाती है ।हां , वह दौर बहुत ही मुश्किल और भयानक दर्द वाला था ।लेकिन एक मां और एक औरत कभी भी बहुत समय आराम नहीं कर सकती ।इसलिए
सर्जरी के 3 महीने बाद ही मैंने घर को संभालना शुरू कर दिया क्योंकि उससे पहले मैंने कभी भी बच्चों की कोई भी जिम्मेदारी किसी को नहीं दी थी। मैं बैसाखी के सहारे ही सारे काम खुशी-खुशी कर लेती थी। कपड़े भी हाथ से धोना, मैं झाड़ू पोछा भी किया ।है पर वह कभी भी मुझे मुश्किल भरा नहीं लगा ।मैं उसे आनंदमई तरीके से करती रही ।क्योंकि मेरे लिए वह जिंदगी का एक हिस्सा था और उसे हर हाल में मुझे निभाना था। बेशक मेरी बीमारी में मेरे दोस्तों और परिवार लोगों का बहुत साथ रहा पर मेरी सकारात्मक सोच ने हमेशा मेरी और उन लोगों के में बीच मतभेद बनाए रखे,क्योंकि मैं हर मुश्किल को बहुत देर तक मुश्किल नहीं मानती हूं। मेरे लिए वह सिर्फ कुछ पल ही होते हैं उन पलों को गुजरना मेरे जिम्मे में होता है कि मैं रो कर बिताऊं या खुश होकर बिताऊं। इसलिए मेरा खुश रहना.. हर हाल में खुश रहना लोगों के लिए मुसीबत होता है। कई बार मेरी इस आदत का खामियाजा मुझे भुकतना पड़ता है ।क्योंकि सामने वाला समझ ही नहीं पता है कि मैं कितनी तकलीफ में हूं या फिर मुझे मेरे दर्द की इंतहा कितनी है ।पर फिर भी मैं बहुत खुश हूं कि लोगों का साथ बेशक मुझे ना मिले पर उस भगवान का साथ मेरे साथ हर पल रहता है ।
उसे दौरान जब कभी भी मन परेशान होता। कभी भी, तो मैं कागज कलम को अपना सहारा बनाया मैं क्या लिखती थी कभी मुझे मालूम ही नहीं पड़ा फिर धीरे-धीरे सोशल मीडिया पर अपनी लिखित को पोस्ट कर देती थी लोगों से बहुत सराहना मिली। मैं जब भी काम कर रही होती ,रसोई में होती ,कुछ भी कर रही होती तो दिल दिमाग में ल इन बन जाती ।वह कब कविता का रूप बन गई मुझे नहीं पता चला। अभी तक मेरी अपनी दो किताबें और बहुत सारे का संग्रह का हिस्सा बनी हूं। देश-विदेश देश की पत्र पत्रिकाओं में भी मेरी रचनाएं छपती रहती हैं ।मैं हर रोज अपने दिन से कम से कम आधा घंटा किसी न किसी ऐसे व्यक्ति को देती हूं जो बहुत मुश्किल में हो, चाहे फिर वह मेरा दोस्त हो भी या ना भी हो ।मैं समझती हूं कि आज के समय में किसी के साथ भी भावनात्मक तौर पर जुड़कर हम उसकी समस्या का समाधान करना चाहिए ,ना कर सकते हो पर उसको एक तसल्ली जरूर दे सकते हैं ।मैं मोटीवेटर स्पीकर के तौर पर मैंने जयपुर से गोल्ड मेडल भी हासिल किया है। अपनी काव्य शैली के तौर पर भी मैं बहुत से अवार्ड प्राप्त किए हैं , मेरा जन्म दिसंबर में तब हुआ जिन दिनों में श्री गुरु गोविंद सिंह जी के परिवार के शहीदी दिवस होते हैं तो मैं हमेशा यही मानती हूं कि वह सभी शहीद, मेरे साथ हमेशा खड़े रहते हैं ।मैं खुद को गुरु गोविंद सिंह जी की बेटी मानती हूं कि जब वह कभी मुश्किलों से नहीं घबराये तो मैं क्यों घबराऊं??
सर्जरी के तकरीबन 9- 10 महीने बाद मुझे नकली अंग मिल गया उसके बाद जिंदगी थोड़ी सी आसान होनी शुरू हो गई ।डॉक्टर ने हमें कहा था कि यह एक अद्भुत कैंसर है यह साल में भी दुबारा हो सकता है ।2 साल में भी फिर से हो सकता है और जब यह दोबारा होगा तो यह बहुत भयानक होगा। लेकिन मेरी हिम्मत और भगवान की कृपा से 10 साल तक मुझे कोई भी प्रॉब्लम नहीं आई मेरे सारे अंग बिल्कुल तंदुरुस्त थे 10 साल बाद मैंने लोगों को बताया कि मेरे साथ ऐसा हुआ था उससे पहले कुछ लोगों को ही मेरी प्रॉब्लम के बारे में पता था पर अचानक 2021 में जब मैं नकली पैर को फिर से बनवाया तो वह मुझे सही नाप का नहीं बनाया गया था इसलिए उसके साथ मुझे बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न हो गई ।मेरी रीड की हड्डी में प्रॉब्लम आ गई मेरे बाय घुटने में भी प्रॉब्लम आ गई । पता नहीं वजह क्या थी ...मेरे स्टमप पर न्यूरोमा हो गया ।हमें डॉक्टर ने कहा कि उसको काट कर निकाल तो देते हैं पर हमें पता नहीं है कि अंदर बीमारी कितनी बड़ी होगी हमें नहीं पता कि आगे और कितनी टांग काटनी पड़े ।लेकिन मैंने आप आपसे वादा किया है कि अब मैं कोई भी सर्जरी नहीं करवाऊंगी और पूर्ण रूप से भगवान के सहारे मैं इस बीमारी को भी अल विदा कहेंगी।

मोहाली
7696919159

कविताएं

संग तेरे ही रहती हूँ हर पल

मैं जिस्म तू रूह है मेरी जॉना
जिस्मानी मुश्किल से डरती हूँ हर पल

तुझे हर खुश रखना हसरत है दिल की
उसी कोशिश में रहती हूँ हर पल

खुदा माना है मैंने तुझे अपना
तेरी ही इबादत करती हूँ हर पल

जानती हूँ रह नहीं पाते मुझ बिन
चाहते हो मैं आसपास रहूँ हर पल

तुझसे नहीं खुद से ही रूठ जाती हूँ
तेरे लिए ही तो जीती हूँ हर पल।

मिलन
खुद से खुद का मिलन है मुश्किल
सब को खुश करने की कोशिश में
खुद ही के लिए मुस्कुराना है मुश्किल

महफिलों में तो चहकती हूँ हर पल
खुद से बतियाना है मुश्किल

बिखर गई रिश्ते संभालते संभालते
अब खुद को समेटना है मुश्किल

गम छुपा के सभी की हिम्मत बनती हूं
खुद के जख्म सहलाना है मुश्किल।

जन्मदिन
ए खुदा एक और पन्ना
पलट गया किताबे जिंदगी का
तेरी रहमतों के साथ

ज़िंदगी की उलझनें सुलझाते सुलझाते
हर गम में भी मुस्कुराते मुस्कुराते

कुछ दोस्त उतर गए रूह तक
कुछ हो गए दूर मुझे आज़माते आज़माते

बस...तू मेहर करना हर कदम पर
यूँ ही रहमतें बरसाते बरसाते।

बिन तेरे
तेरी फ़िक्र तो बहुत है
पर जब कुछ कर नहीं पाती हूँ
तुझ से नहीं खुद से ही रूठ जाती हूँ

तुझ पर क्या गुजरती होगी
जब पास नहीं मैं होती
बस इसी कशमकश में उलझ जाती हूँ

दिल कहता है चाहूँ तुम्हें प्रेमिका की तरह
पर कई बंधनों में बंध जाती हूँ

रखना चाहती हूँ तुझे एहसास बनाकर
पर हालात के हाथों लाचार हो जाती हूँ

तुम समझते हो हालात मेरे
मैं क्या हूँ , बिन तेरे
मैं क्या करना चाहती हूँ

तुम समंदर हो तो
मैं बनके दरिया
बस तुझ में समा जाना चाहती हूँ ।

46
ए खुदा एक और पन्ना
पलट गया किताबे जिंदगी का
तेरी रहमतों के साथ

ज़िंदगी की उलझनें सुलझाते सुलझाते
हर गम में भी मुस्कुराते मुस्कुराते

कुछ दोस्त उतर गए रूह तक
कुछ हो गए दूर मुझे आज़माते आज़माते

बस...तू मेहर करना हर कदम पर
यूँ ही रहमतें बरसाते बरसाते।

बिन तेरे
तेरी फ़िक्र तो बहुत है
पर जब कुछ कर नहीं पाती हूँ
तुझ से नहीं खुद से ही रूठ जाती हूँ

तुझ पर क्या गुजरती होगी
जब पास नहीं मैं होती
बस इसी कशमकश में उलझ जाती हूँ

दिल कहता है चाहूँ तुम्हें प्रेमिका की तरह
पर कई बंधनों में बंध जाती हूँ

रखना चाहती हूँ तुझे एहसास बनाकर
पर हालात के हाथों लाचार हो जाती हूँ

तुम समझते हो हालात मेरे
मैं क्या हूँ , बिन तेरे
मैं क्या करना चाहती हूँ

तुम समंदर हो तो
मैं बनके दरिया
बस तुझ में समा जाना चाहती हूँ ।

अधूरा ख्वाब
तेरे बिन मेरे अल्फ़ाज़ बिखर गए
गजल लिखूँ तो लिखूँ कैसे

ना दर्द है दिल में ना ही चैन है
मोहब्बत की कहानी लिखूँ कैसे

ना मेरे हो ना ही बेगाने हो
तुझे अपनों में लिखूँ कैसे

मेरी जिंदगी की हकीकत हो तुम
तुझे अधूरा ख्वाब लिखूँ कैसे

तुझसे ही है यह मेरी सांसे
तुझे दिल का दुश्मन लिखूँ कैसे

कर ले मुझसे तो नफरत जितनी चाहे
खुदा हो मेरे, तुझे बेवफा लिखूं कैसे।

सिसकियाँ
ये क्या कर दिया तेरे इश्क ने
दिल को क्यों रुला दिया तेरे इश्क ने

ये सिसकियों भरा सैलाब
बना दिया है तेरे इश्क ने

ना तू बेवफ़ा ,ना खुदगर्ज मैं हूँ
कैसा मंजर बना दिया तेरे इश्क ने

मुझसे जुदा नहीं रग रग में समाई हो
जुदाई का आलम बना दिया तेरे इश्क में।

धोखा
ना जाने क्यों दिल कह रहा है
सनम तू धोखा खा रहा है

इश्क इबादत है खुदा की
तु यार को खुदा बना रहा है

छूट गई दुनिया तुझसे
तू फिर तन्हा हुए जा रहा है

रब मिलना आसान है जग में
क्यों तू शुदाई हुए जा रहा है

ऐ सनम! तू भी हौसला दे मुझे
मेरा जन्म तुझ पर फिदा हुए जा रहा है।

खुशबू
आज उदास हूँ ,मन भी बेचैन है
तुम्हारा ख्याल मुझे सुकून देता नहीं
यह कैसी धुंधली सी तस्वीर बनी है
कोई रंग दिखाई मुझे देता नहीं

वक्त कैसा समा बांध रहा है
एक पल भी खुशहाल देता नहीं

हर अहसास से वाकिफ़ हूँ तेरे
क्यों दिल आज चैन लेता नहीं

तुम से ही महक जाती है बगिया मेरी
आज कोई फूल खुशबू देता नहीं

वह एहसास ही जोड़ते हैं हमको
आज कोई एहसास सुकून देता नहीं

थक सी गई हैं ये निगाहें मेरी
क्यों तुम मुझे दीदार देता नहीं।

अनजानी राह
ज़िंदगी की अनजानी राहों में
कुछ लोग यूँ ही मिल जाते हैं
जो खुद से भी ज्यादा खास बन जाते हैं

पल भर में ज़िंदगी के गम भुला कर
एक महकती शाम बन जाते हैं

किताबी ज़िंदगी के पन्ने पर
एक खूबसूरत सी ग़ज़ल बन जाते हैं।

खुद से रूबरू
तमन्ना थी बरसों से कि
हो लूँ रूबरू मैं खुद से

हालातों और जिम्मेदारियों में उलझी
कभी मिल ही ना पाई मैं खुद से

की मैंने कई बार गुजारिश आईने से भी
वह भी ना मिला पाया कभी मुझे खुद से

कहने लगा कि झूठा हूँ मैं तो
ढूँढ लो 'खुद को' 'खुद में' ही खुद से

शुक्रिया ए तन्हाई
तू आई ज़िन्दगी में
तेरे ही कारण मिल पाई आज मैं खुद से।

क्या से क्या
हम ग़मों संग दोस्ती निभाना सीख गए
अश्कों को बारिश में छुपाना सीख गए

बड़ी नादानियों से जी थी ज़िंदगी अब तक
अब समझदारियों संग जीना सीख गए

पहले हँसा करते थे दिल से हम
अब लबों से मुस्कुराना सीख गए

पहले महफ़िल थी पसंद मुझे
अब तन्हाइयों के हमसफ़र हो गए

ए जानेमन, देख तेरे इश्क में
हम क्या से क्या हो गए।

समझौता कर लेते हैं
तु मुझे दर्द देकर खुश रहना
हम तेरे दर्द को ही दवा बना लेंगे
तुम हम से बेवफ़ाई करना
हम कोई इल्ज़ाम ना देंगे

तु कर देना चाहे बदनाम मुझे
हम किसी से तेरा नाम ना लेंगे

तू दूर रहना चाहे मुझसे
हम हर पल अपने करीब पाएँगे।

हम लिखारी
मेरी दोस्त मुझे अक्सर कहती है
लिखारी पागल होते हैं
खुद में ही वह मदहोश रहते हैं

मैंने भी कह दिया लिखने में भी
अलग ही नशा है
हम लिखारी इसी में चूर रहते हैं
तभी तो दुनिया के हर नशे से
हम दूर रहते हैं

हम में ना किसी के लिए जलन है
ना ही मगरूर है कोई
एक दूजे की कलम को
प्रोत्साहित करते रहते हैं

हम लिखारी प्रकृति के दीवाने होते हैं
हाँ ,हम तो अपने ही नशे में मदहोश रहते हैं।

तेरा इश्क
यह कैसी कशमकश में
डाल दिया तेरे इश्क ने

तेरे संग मुस्कुराऊँ
ये ज़िंदगी को गवारा नहीं

मौत संग चली जाऊँ मैं
ये बात तुझे गवारा नहीं

मुझसे बिछड़ कर तू तड़पे
इस पागल दिल को गवारा नहीं

ज़िंदगी , मौत और एक तू
किसी एक के साथ ...
पर किसके साथ रहूँ मैं
तुम तीनों को मेरी जुदाई गवारा नहीं

जिंदगी को इम्तिहान लेने हैं
वो चाहती है मुझे सुलाना
दोनों को ही शायद तेरा मेरा साथ गवारा नहीं

जीना संग तेरे
सोचती हूँ अब तुमसे
इश्क की बातें ना करूँ
ये सासें बेवफ़ा सी लगती हैं
तुम से कोई वादा ना करूँ

जीना चाहती हूँ संग तेरे
एक पल भी तन्हा नहीं चाहती हूँ

तेरा इश्क है मेरी धड़कनों की वजह
हर सांस पर लुटाना चाहती हूँ

मेरी जान मैं तेरे इश्क में
हद से गुजर जाना चाहती हूँ

छुपा ले मुझे खुद में तू
मैं तुझ पे मर मिटना चाहती हूँ।

डायरी
वादा है तुमसे ए,मेरी डायरी
वफ़ा पूरी तुम से निभाएंगे

किताब ए ज़िंदगी के पन्नों को
अब ना किसी को पढ़ाएंगे

चाहे भी कोई पढ़ ना सकेगा
मुस्कुराहट से हर दर्द को लिख जाएंगे
तू ही मेरी हमदर्द ,हमसफ़र है
हम तेरे तलबगार बन जाएंगे

दुनिया नींबू लगाती है ज़ख्मों पर
हम लफ्ज़ों से मलहम लगाएंगे

सजाएंगे तुझे दुख सुख के पिरो के मोती
रहती दुनिया तक तुझे 'अमर' कर जाएंगे

वादा है तुझसे ऐ ,मेरी डायरी
वफ़ा पूरी तुमसे हम निभाएंगे।

समंदर
काश! समंदर की हदों पर भी दीवार होती
दरिया को समा जाने की इजाज़त ना होती ।

समा ना पाता हर ' शै' को अपनी गहराई में
अगर इस ने भी कोई चोट खाई ना होती।

एक गुरुर रहता इसे खुद की लहरों पर
कोई सुनामी अगर आई न होती ।

बहक जाता है देख कर चमक चाँदनी की
मचल जाता है उसे छू लेने को
पा ही लेता ये चांदनी को भी
अगर चांद में ज्वार भाटा लाने की औकात ना होती ।

तू भी तो है गहरा समंदर ज़माने के लिए
रहस्य ही रह जाती तेरी गहराई
अगर जिंदगी में तेरी
मैं सुनामी बन के ना आई होती।

धान की बाली
बजाई जाए कहीं
रोपाई जाए कहीं
तू धान की बाली
तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली

तेरे होने से ही घर में
ती खुशियों की उजाली
जैसे पूजा में अक्षित
वैसे हर घर में पूजा की तू थाली
तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली

बचपन से ही तेरे लाडो में
होती होली और दिवाली
विदा होकर तू एक दिन
कर जाती घर को खाली
तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली

'ऐ बेटी तू संभल जा'
तेरी राहें हैं कांटों से भरी
बिन सोचे ना कदम बढ़ा
जाने कौन दरिंदा है
बंद आंखों से ना विश्वास जता
तुझे छूना है आसमां की बुलंदी को
बीच रास्ते में ना डगमगा
राहें बहुत हैं तेरे आगे
ऐ बेटी तू संभल जा

मां बाबा की तू शान है
उनके जीवन का अरमान है
जवानी की इन हिलौरो में
अपने जीवन को ना दाग लगा
आकर किसी की भी बातों में
अपनों के प्रेम को ना ठुकरा
सौभाग्य से मिले इस जीवन पर
प्रश्नवाचक ना चिन्ह लगा
ऐ बेटी तू संभल जा
बेटी तू संभल जा

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

नये भारत का नया उत्तर प्रदेश

लड़ाकू विमान की इमरजेंसी लैंडिंग के लिए गंगा एक्सप्रेसवे, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे एवं बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर हवाई पट्टी विकसित

उत्तर प्रदेश में 4 ईएलएफ ऑपरेशनल

संचालित एक्सप्रेसवे

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे : लखनऊ से गाजीपुर (341 किमी.), **आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे : आगरा से लखनऊ** (302 किमी.) **बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे : चित्रकूट से इटावा** (296 किमी.), **यमुना एक्सप्रेसवे : ग्रेटर नोएडा से आगरा** (165 किमी.), **दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे : मेरठ से दिल्ली** (96 किमी.), **नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे** (25 किमी.)

निर्माणाधीन एक्सप्रेसवे

गंगा एक्सप्रेसवे, बलिया लिंक एक्सप्रेसवे, गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे, चित्रकूट लिंक एक्सप्रेसवे, आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे को पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जोड़ने वाला लिंक एक्सप्रेसवे, बुंदेलखण्ड एक्सप्रेसवे एवं आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे को वाया फर्रुखाबाद, गंगा एक्सप्रेसवे से जोड़ने वाला लिंक एक्सप्रेसवे, जेवर एयरपोर्ट लिंक एक्सप्रेसवे, विंध्य एक्सप्रेसवे , चंदौली से गाजीपुर में पूर्वांचल लिंक एक्सप्रेसवे को जोड़ने के लिए स्पर का निर्माण, बुंदेलखण्ड एक्सप्रेसवे को चित्रकूट से प्रयागराज होते हुए रीवा मार्ग से जोड़ने हेतु एक्सप्रसेवे, गंगा एक्सप्रेसवे को मेरठ से हरिद्वार को जोड़ने हेतु एक्सप्रेसवे

6 एक्सप्रेसवे संचालित
11 निर्माणाधीन
देश के कुल एक्सप्रेसवे नेटवर्क में उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक हिस्सेदारी

- साइबर सुरक्षा में टेक्नोलॉजी ट्रान्सलेशन रिसर्च पार्क की स्थापना का कार्य प्रगति पर
- भारत का सबसे बड़ा विद्युतीकृत, 16,000 किमी. से अधिक का रेलवे नेटवर्क यूपी में
- दादरी (ग्रेटर नोएडा) में वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर एवं ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का जंक्शन
- उत्तर प्रदेश 05 अंतर्राष्ट्रीय और 16 घरेलू हवाई अड्डों के साथ 21 एयरपोर्ट वाला राज्य बनने की ओर अग्रसर
- पीएम गति शक्ति नेशनल मास्टरप्लान को लागू करने वाला अग्रणी राज्य
- अटल इण्डस्ट्रियल इन्फ्रास्ट्रक्चर मिशन का शुभारम्भ
- लखनऊ, अलीगढ़, कानपुर, झांसी, आगरा और चित्रकूट में 06 नोड पर डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर का विकास
- देश का पहला अंतर्देशीय जलमार्ग विकसित। उत्तर प्रदेश अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण का गठन
- वाराणसी में 100 एकड़ में भारत का पहला फ्रेट विलेज विकसित
- ग्रेटर नोएडा में आईआईटी जीएनएल, बरेली में मेगा फूड पार्क, उन्नाव में ट्रांसगंगा सिटी, गोरखपुर में प्लास्टिक पार्क, गोरखपुर में गारमेंट पार्क का विकास
- लखनऊ का आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स सिटी के रूप में विकास

काम दमदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP